श्रावण मास - 14 जुलाई 2022 से 12 अगस्त 2022

हरियाली अमावस्या - 28 जुलाई 2022

रसेश्वरी मातंगी साधना

रस, माधुर्य, प्रेम, आनन्द, सौन्दर्य, रति-अनंग प्रदायक रसेश्वरी मातंगी गृहस्थ जीवन का आधार है।

गृहस्थ जीवन में रस का प्रवाह अनंग-रति संयाग से ही होता है। मातंगी साधना से मन में भावों का निरन्तर प्रवाह रहता है। स्तम्भन और वशीकरण शक्ति में वृद्धि होती है इसीलिए विश्वामित्र ने कहा है कि गृहस्थ व्यक्तियों को मातंगी महाविद्या की उपासना निरन्तर करनी चाहिये।

हरियाली अमावस्या 28 जुलाई 2022 अथवा श्रावण मास (14 जुलाई 2022 से 12 अगस्त 2022) में किसी भी दिन **रसेश्वरी मातंगी** साधना को सम्पन्न करने के सिद्ध दिवस है। इसके अतिरिक्ति पूरे वर्ष में **किसी भी शुभ योग (सर्वार्थ सिद्धि योग, अमृत योग, द्विपुष्कर योग, त्रिपुष्कर योग, रवि पुष्य योग, गुरु पुष्य योग)** में भी रसेश्वरी मातंगी साधना सम्पन्न की जा सकती है। प्रातः काल उठकर स्नान करने के पश्चात् **'निखिल साधना विधान'** पुस्तक से गुरु पूजन सम्पन्न करें तथा इस साधना में सफलता के लिए प्रार्थना करें। तत्पश्चात् दक्षिणाभिमुख होकर बैठ जाएं। सर्वप्रथम **'मातंगी यंत्र'** को हाथ में लेकर जल से स्नान कराएं, तत्पश्चात् उसे पोंछ कर किसी ताम्र पात्र में स्थापित करें। यंत्र का कुंकुम अक्षत से पूजन करें, तथा धूप (अगरबत्ती) दीपक जला दें। इसके पश्चात् दोनों हाथ जोड़कर भगवती मातंगी का ध्यान करें -

श्यामां शुभ्रांशु भालां त्रिनयनं कोमलां रत्नसिंहासनस्थां,
भक्ता भीष्ट प्रदात्रीं सुरनिकरासेव्यकज्जांघ्रियुग्माम्।
नीलाम्भोजांशुकान्तिं निशिचर निकरारण्य दावाग्निरूपां,
पाश खड्गं चतुर्भिर्वरकमल करैः चेटकञ्चांकुशञ्च।
मातंगीमावहन्ती मभिमतफलदां मोदिनीं चिन्तयामि।

श्याम रंग से सुशोभित भगवती मातंगी, जिनका मस्तक तेज से युक्त है, तीन नेत्रों वाली, कोमल हृदय वाली देवी जो रत्न के सिंहासन पर विराजमान हैं। अपने भक्तों को अभीष्ट फल प्रदान करने वाली हैं, देवगण भी जिनके दोनों चरणों की पूजा करते हैं, नील कमल के समान, कान्ति से पूरित, शत्रुओं का संहार करने वाली, जिनके चारों हाथों में पाश, खड्ग, अंकुश, कमल हैं, जिनसे वे शत्रुओं का नाश कर साधक को अभीष्ट फल देती हैं, ऐसी आनन्ददात्री भगवती मातंगी को मैं नमस्कार करता हूं।

तुम हर पल युवा हो। तुम्हारा हर एक पल जिन्दगी का नया पल है, कोई पुराना पल लौटकर वापिस नहीं आता, नया तरोताजा स्वस्थ पल तुम्हारी जिन्दगी में हर समय आ रहा है...

फिर क्यों अपनी खुशियों को, निराशाओं की गर्त में डाल देते हो...

खुशियों की चाबी तुम्हारे पास है और यदि तुम हर बात में मीन-मेख ही निकालते रहे तो यदि ईश्वर भी तुम्हें हजार वरदान दे दें तो भी तुम उन पर निराशाओं का काला आवरण डाल दोगे...

- सद्गुरुदेव नन्द किशोर जी श्रीमाली।

इस प्रकार मातंगी का ध्यान सम्पन्न करने के पश्चात् मातंगी का विनियोग करें -

विनियोग -

हाथ में थोड़ा सा जल लें और यह मंत्र उच्चारण करके विनियोग करें -

अस्य मन्त्रस्य मतङ्गऋषिरनुष्टुप्छन्दो मातङ्गी देवता ममाभीष्टसिद्धयर्थे जप विनियोगः।

अब दोनों हाथ जोड़कर निम्न मंत्र का उच्चाकरण करें -

ॐ घनश्यामलाङ्गीं स्थितां रत्नपीठे
शुकस्योदितं श्रृण्वतीं रक्त वस्त्राम्।
सुरापान मत्तां सरोज स्थितां श्रीं भजे
वल्लकीं वादयन्तीं मातङ्गीम्।।

इसके पश्चात् भगवती मातंगी की नौ शक्तियों का आह्वान करें। इस हेतु इन नौ मंत्रों का उच्चारण करें तथा प्रत्येक मंत्र उच्चारण के पश्चात् यंत्र पर अक्षत चढ़ाएं -

ॐ विभूत्यै मातंग्यै नमः।
ॐ उन्नत्यै मातंग्यै नमः।।
ॐ कान्त्यै मातंग्यै नमः।।
ॐ सृष्ट्यै मातंग्यै नमः।।
ॐ कीर्त्यै मातंग्यै नमः।।
ॐ सन्नत्यै मातंग्यै नमः।।
ह्रुॐ व्युष्ट्यै मातंग्यै नमः।।
ॐ उत्कृष्टये मातंग्यै नमः।।
ॐ ऋद्धयै मातंग्यै नमः।।

आसन

आसन के लिये पुष्प रखें -

श्री मातंग्यै नमः पुष्पासनं समर्पयामि नमः।

पाद्य

दो आचमनी जल चरण धोने के लिए समर्पित करें -

श्री मातंग्यै नमः पादयोः पाद्यं समर्पयामि नमः।

अर्घ्य

अर्घ्य पात्र में जल, अक्षत और कुंकुम मिलाकर अर्पित करें-

श्री मातंग्यै नमः अर्घ्यं समर्पयामि नमः।

मधुपर्क

दही, घी एवं शहद मिला कर अर्पित करें -

श्री मातंग्यै मधुपर्कं समर्पयामि नमः।

आचमन

तीन आचमनी जल चढ़ावें -

श्री मातंग्यै नमः इदमाचनीयं समर्पयामि नमः।

शुद्ध जल स्नान

मंत्र का उच्चारण करते हुए तीन आचमनी जल चढ़ावें -

श्री मातंग्यै नमः सांग स्नानं समर्पयामि नमः।

इसके बाद **'मातंगी माला'** से निम्न दशाक्षर मंत्र की 11 माला मंत्र जप 7 दिन तक नित्य करें।

।।ॐ ह्रीं क्लीं हुं मातंग्यै फट् स्वाहा।।

साधना समाप्ति के बाद साधक यंत्र व माला को नदी अथवा तालाब में विसर्जित कर दें। इस साधना से निश्चय ही साधक को भगवती मातंगी की कृपा प्राप्त होती है और उपरोक्त लाभ प्राप्त होते हैं।

प्राण प्रतिष्ठा न्यौ. - 450/-